आपातकाल में सृजन फुलवारी

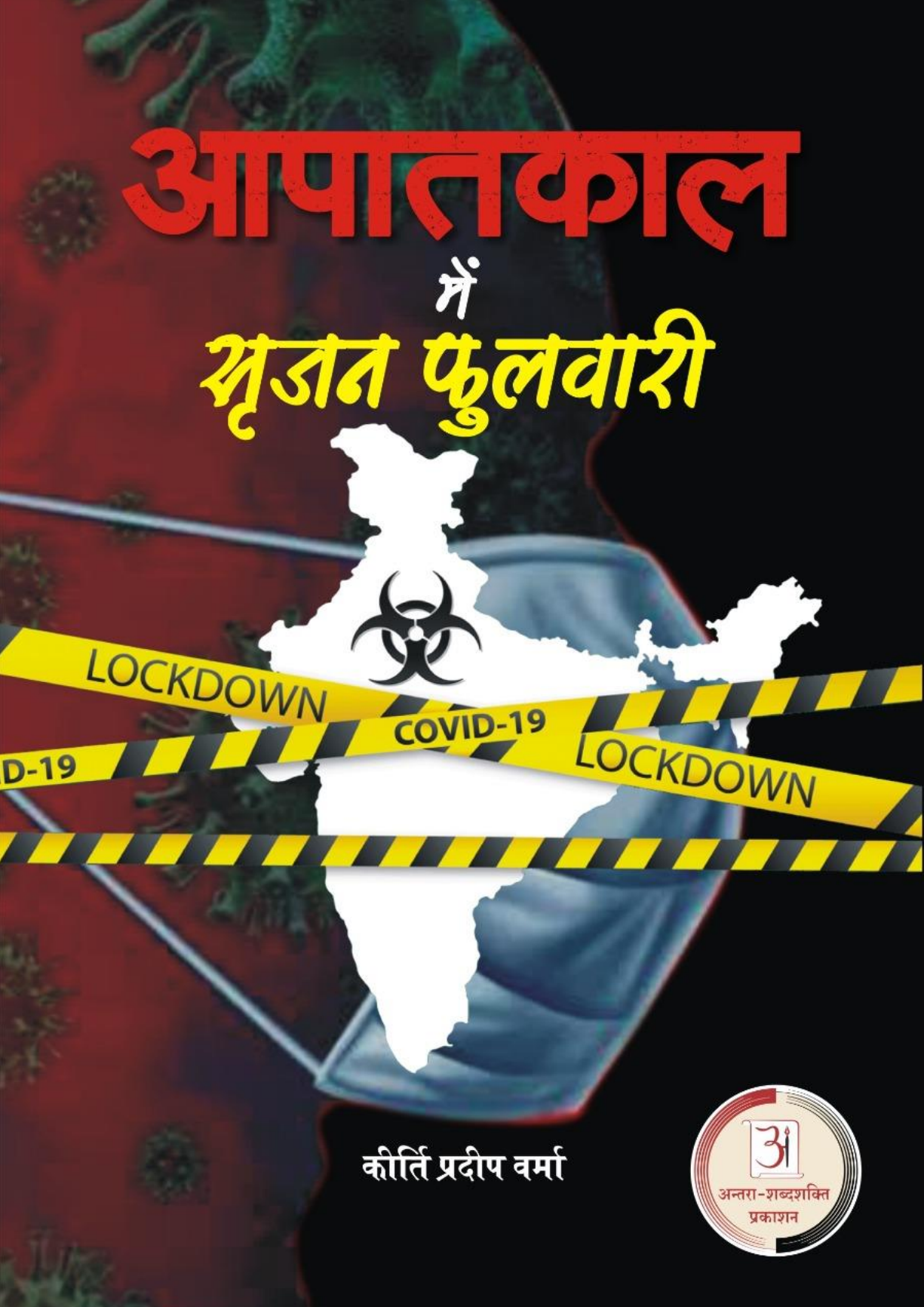

कीर्ति प्रदीप वर्मा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

(बाल कविताएँ)

कीर्ति प्रदीप वर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-179-4
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
रेखा चित्रकार- जयति सुराना
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, कीर्ति प्रदीप वर्मा
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KEERTI PRADEEP VERMA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुजर रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (COVID19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय श्समकित सुरानाश् से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय "संदीप सोनी" ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सजा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	प्रार्थना	6
2.	बाग बगीचा	7
3.	मेरा अरमान	8
4.	गर्मी के दिन	9
5.	बारिश आई	10
6.	सर्दी आई	11
7.	सूरज नाना	12
8.	गुस्सा	13
9.	कसम बचपन की	14
10.	होली आई	15
11.	लोरी	16
12.	लौट आओ गौरैया	17
13.	नटखट	18
14.	लालच बुरी बला	19
15.	मेरा सपना	20
16.	चँदा मामा	21

प्रार्थना

हम नन्हे बालक नादान
हमको बुद्धि दो भगवान।

पढ़ लिख कर हम नेक बने
पायें जग में हम सम्मान।

खेले कूदे स्वस्थ रहें
रहें सदा हम सब बलवान।

मिलजुल करके सदा रहे
ऐसा दो हमको वरदान।

मात पिता की करेंगे सेवा
गुरुजनों को दे हम मान।

जन्मभूमि है सबसे प्यारी
करें सदा इस पर अभिमान।

आँख उठायेगा जो दुश्मन
अंत करो हे कृपानिधान।

नेक राह पर चलें सदा हम
करो प्रभु सबका कल्याण।

बाग बगीचा

बच्चों सुन लो एक कहानी
कहती थी जो मेरी नानी

हरी भरी सुन्दर वसुधा थी
दूध दही की नदियाँ बहतीं
भारत सोने की चिड़िया था
निर्मल था नदियों का पानी।

हम सब पर फिर स्वारथ छाया
कांक्रीट का जंगल बनाया
दूषित किया नदियों का पानी
वच्चो सुन लो एक कहानी ।

बच्चों अब तुम पेड़ लगाओ
वसुधा को फिर हरी बनाओ
व्यर्थ बहे न नलों का पानी।
बच्चों सुन लो एक कहानी।

बच्चों सुन लो एक कहानी
कहती थी जो मेरी नानी।

मेरा अरमान

चाँद हो मुट्ठी में पॉकेट में आसमान
सारे जहाँ की खुशियाँ पाने का अरमान।
चाँद हो मुट्ठी में.....

धरती में बोये मैंने कुछ सपने
काटेंगे फसलें मेहनत से अपने
कर लूँ काबू में ये दुनिया ये जहान
चाँद हो मुट्ठी में....

थोड़ा सा भोला थोड़ा शैतान हूँ
कदमों के नीचे रखता जहान हूँ
पढ़ लिख कर पाऊंगा ऊँचा मकाम
चाँद हो मुट्ठी में...

पापा हों राजा, माँ होगी रानी
परियों के देश की होगी कहानी
लंबी सी गाड़ी पर न हो अभिमान
चाँद हो मुट्ठी में....

गर्मी के दिन

गरमी में छुट्टी मिल जाती
फिर माँ नानी के घर जाती
झूमें नाचें मिल कर खायें
बरफ का गोला और आइसक्रीम।
प्यारे लगते....!!!

खेल कूद से हुई दोस्ती
और किताबों से हुई कुट्टी
कहानी किस्से और
चुटकुले
छोटी रातें लंबे दिन।
प्यारे लगते....!!!

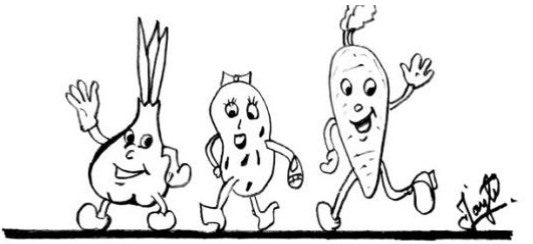

दोपहर में जब माँ सो
जाती
टोली मित्रों की आ जाती
कैरम, लूडो, छुपम छुपाई
सब मिल नाचे तक धिन धिन।
प्यारे लगते....!!!

मामा के संग नदी पे जाते
टायर की हम नाव बनाते
छोटी सी सायकल पर चढ़
बजाते घंटी हम ट्रिन ट्रिन।
प्यारे लगते....!!!

गरमी के दिन कभी न जाना
सूरज काका को समझाना
बच्चों की तुम बात मान लो
तुमको भी देंगे आइसक्रीम।
प्यारे लगते....!!!

बारिश आई

बारिश आई बारिश आई
खुशियाँ कितनी संग में लाई।

रिमझिम रिमझिम बूंदे प्यारी
हरी भरी हो गई है क्यारी।

आओ मिलकर मौज मनायें
कागज की अब नाव चलायें।

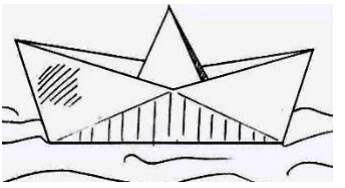

ककड़ी भुट्टे और पकौड़े
खाकर सब मिल भागें दौड़ें।

रंग बिरंगे छाते बरसाती
बारिश हमको बहुत है भाती।

जोर जोर से जब तुम आतीं
सड़कें पानी से भर जातीं!

शाला की छुट्टी हो जाती
बारिश हमको बहुत ही भाती।

सर्दी आई

सर्दी आई-सर्दी आई
झोली भरकर खुशियाँ लायी।
चारों ओर है कोहरा छाया
जो हम सबके मन को भाया।

बड़े दिनों की छुट्टी मिलती
ठंडी हमको अच्छी लगती।
मुँह से भाप निकलती ऐसे
चले रेल का इंजन जैसे।

सूखे होंठ, गाल है लाल
ठंड से हाल हुआ बेहाल।
माँ रात को क्रीम लगाती
टोपा, मोजा खूब पहनाती।

लड्डू, चिक्की, गर्म परांठे
घर मे सबको बहुत ही भाते।
धूप तापते दादा-दादी
माँ छत पर पापड़ बनाती।

नहाने में तो शामत आई
लगें प्यारे कंबल रजाई।
सर्दी आई-सर्दी आई।
सर्दी आई-सर्दी आई

सूरज नाना

सूरज नाना जल्दी आना।
सूरज नाना जल्दी आना।।

ठंडी बहुत सताती है
माँ जल्दी से उठाती है।
सुबह सुबह मुझे नहलाती
फिर स्कूल की ड्रेस पहनाती।
मैं डर कर रह जाता हूँ
ठंडी से कंप जाता हूँ।

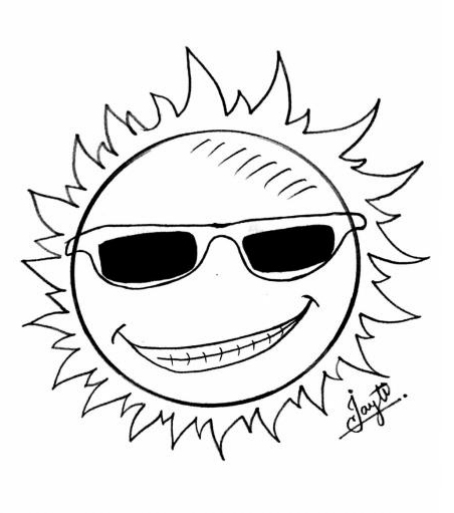

तुम जो जल्दी आ जाते
धूप जरा सी दे जाते
जगतपिता तुम, माँ कहती है
नित्य तुम्हे वो जल देती है।
विनती मेरी भी सुन जाना
सूरज नाना जल्दी आना।।

सूरज नाना जल्दी आना।।

गुस्सा

जी करता गुस्सा हो जाऊँ
दरवाजे की ओट में जाऊँ
इतनी जोर जोर से रोऊँ
पापा, मम्मी, दादी को बुलाऊँ।

दादी भी पुचकार के कहती
मेरी गुड़िया क्यों है रूठी?
आजा तुझे झूला झुलाऊँ
रानी की कहानी सुनाऊँ।

मम्मी झट गोदी में लेती
आँसू पोंछ बलैयाँ लेती
बिटिया रानी क्या खाएगी?
जो बोले माँ बनाएगी।

पापा झट बाजार ले जाएं
जो बोलूं फिर मुझे दिलाएं।
मैं भी कितनी खुश हो जाती
दुनिया की दौलत पा जाती।

कसम बचपन की

कितने अच्छे थे वे दिन
और कितने सच्चे थे हम
बात बात में खाते थे
"विद्या रानी" की कसम।।

झूठ सांच के न्यायालय में
न्यायाधीश बन जाते थे
और झूठ बोलने वाले को
"माँ की कसम" खिलाते थे।।

कसम चढ़े तो डर जाए मन
फिर युक्ति से जाए उतारी
"सड़ी सुपारी वन में डाली
सीता जी ने कसम उतारी"।।

तन से भले बड़े हो गए
पर झूठे हो गए हैं मन
"गीता" हाथ में रख कर भी
खा लेते हैं झूठी कसम।।

होली आई

होली आई होली आई
नन्हे मुन्नो के मन भाई

होली का डांडा गड़ाओ
लकड़ी कंडे बीनके लाओ
करें धमाल सब मिलकर
पूजा कर होलिका जलाई। होली आई...

लाल गुलाबी नीले पीले
सपने देखे रंग रंगीले
किसे रंगे, छोड़ें किसको
इसी सोच में नींद न आई। होली आई.

बड़े सवेरे से उठ जाते
गुझिया और पापड़ी खाते
कोई छुप रहा है बिस्तर में
और कोई घोंटे ठंडाई। होली आई...

नाचो कूदो दौड़ो भागो
सबको ऐसे रंग लगा दो
उल्टा सीधा समझ न आए
कौन है राधा कौन कन्हाई। होली आई...

लोरी

निंदिया रानी आ जाना,
मुनिया को सुला जाना।
मुनिया मेरी छोटी है,
सोने को वह रोती है
निंदिया रानी आ जाना,
बिटिया को सुला जाना।

बिटिया मेरी छोटी है,
चंदा देखने रोती है
चंदा मामा आ जाना,
तारों को भी संग लाना।
निंदिया रानी आ जाना,
मुनिया को सुला जाना।

बिटिया भूख से रोती है,
दुददु पीने रोती है,
गग्गा मन्नी आ जाना,
मीठा दूध पिला जाना।
निंदिया रानी आ जाना,
बिटिया को सुला जाना।

खेल खिलौने लाएंगे,
पप्पा जब घर आयेंगे
गुड्डा गुड़िया के संग फिर,
मुनिया को नाच नचा जाना।
निंदिया रानी आ जाना,
मुनिया को सुला जाना।

लौट आओ गौरैया

चिड़िया रानी आजा ना
बिटिया को बहला जाना

बिटिया मेरी छोटी है
चूँ चूँ देखने रोती है।
गौरैया तुम आ जाना
जीवन राग सुना जाना।
चिड़िया रानी आ जाना....

आँगन में हैं दाने रखें
और गलती पानी से भरे
चुग्गा अपना खा जाना
ठंडा पानी पी जाना।
गौरैया तुम आ जाना ....

बचपन में तुम आती थी
कलरव बहुत सुनाती थीं
पानी में भी नहाती थीं
धूल में नाच दिखाती थीं।
गौरैया तुम आ जाना.....

अब तुम क्यों नहीं आती हो
मधुर गीत नहीं गाती हो
गलती बहुत हुई हमसे
शायद रूठ गई हमसे।
गौरैया तुम आ जाना...

जंगल सारे नष्ट करें
आँगन के हैं पेड़ कटे
डाल रसायन खेतों में
दाने भी विषयुक्त करें।
गौरैया तुम आ जाना...

बेटी बिन आँगन सूना
और तुम बिन सारा जग सूना
तुम दोनों को बचाएंगे
शपथ आज हम खायेंगे।
चिड़िया रानी आ जाना...

नटखट

चुन्नू मुन्नू प्यारे मित्र
बना रहे थे दोनों चित्र।
चुन्नू ने एक नदी बनाई
और उसमें मछली तैरायी।

देख चित्र को मुन्नू बोला
नटखट सी नजरों से तोला।
चित्र नहीं है अभी यह पूरा
बिन कचरे के रहा अधूरा।

नदी किनारे पन्नी कचरा
फूल माला और गंदा कपड़ा।
नदी किनारे बहते रहते
कितनी गंदी बदबू देते।

बात समझ चुन्नू के आई
नदी किनारे गंदगी बनाई।
चित्र देख टीचर नाराज
सजा मिलेगी तुनको आज!!

हुआ रुआंसा मुन्नू बोला
तोलमोल कर मुहँ को खोला।
नदियों में जो गंदगी बहती
हमने ऐसी ही नदी देखी!!

लालच बुरी बला

मम्मी ने आइसक्रीम बनाई
सोनू मोनू दोनों भाई,

कैसे जल्दी खा लें इसको
दोनों ने एक जुगत भिड़ाई,

फ्रिज खोल कर हाथ बढ़ाया
डिब्बा उनके हाथ न आया,

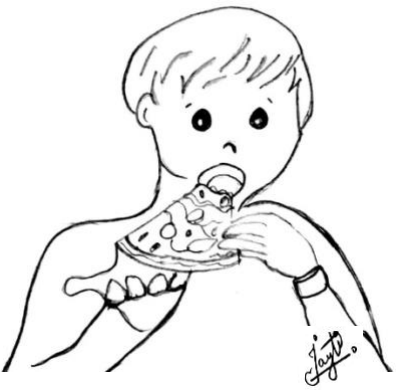

सोनू फिर बन गया घोड़ा
मोनू पीठ पे चढ़ा निगोड़ा,

नीचे से एक चूहा आया
देख उसे सोनू घबराया,

उठ कर के वो दूर था भागा
डिब्बा छूट के नीचे आया,

मोनू जी गिर गए धड़ाम
लालच बहुत बुरा है काम!!

मेरा सपना

मैं हूँ बच्चा
दिल का सच्चा
रंगो का मैं,
भेद न जानू
सब रंगों को
अपना मानू।
लाल मुझे
लगता प्यारा
जलता सूरज
हो अंगारा।
और हरा भी
लगता न्यारा
खेतों का
प्यारा वो नजारा।
सफेद रंग का
अलग नज़ारा
ज्यों पर्वत पर
बर्फ हो सारा
सारे रंग हैं
मेरे अपने
देखूँ सदा
इंद्रधनुषी सपने।

चँदा मामा

चँदा मामा दूर रहे
पाने उसे लाला कहे,
बचपन में अम्मा
लोरियाँ सुनाती है।

चँदा जैसे मुखडे पे
दिठोना लगा के मैया
गोल गोल चंदा जैसी
रोटियां खिलाती है।

यहाँ वहाँ जहाँ कहीं
देखी गोल चीज़ कहीं
हर एक चीज़ उन्हें
गेंद नज़र आती है।

परीक्षा के समय
जो पढ़ाई में कमी करी
तो टीचरजी भी गोल गोल
शून्य दे जाती है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

कीर्ति प्रदीप वर्मा

फोन-७५६६६४८४५२
भारतीय स्टेट बैंक ए.डी.बी. के सामने,
होशंगाबाद रोड बाबई, (म.प्र.)
पिन-४६१६६१

Email- keerti1408@gmail.com
Mobile - 756694852

वैश्विक महामारी के चलते लंबे लॉकडॉउन में जहाँ दुनिया बहुत छोटी हो गई, सभी अपने अपने घरों में कैद अपने विभिन्न प्रकार के शौक पूरे कर रहे हैं या खाने और सोने में समय व्यतीत कर रहे हैं। इन्ही सामान्य जनों में एक ऐसी असाधारण प्रतिभा भी है जिसने इस अमूल्य समय को हमेशा के लिए कैद करने की जुगत लगाई। 'अन्तरा शब्दशक्ति' से जुड़े रचनाकारों को अमरत्व प्रदान करना चाहा। जहाँ से सामान्य इंसान की सोच खत्म होती है वहीं से इनकी सोच आरंभ होती है और इन्होंने विषम स्वास्थ्य परिस्थितियों के चलते अथक परिश्रम कर सभी रचनाकारों को एक बड़ा सरप्राइज दिया! सभी की पुस्तकें प्रकाशित कर इस फुर्सत के समय में लिखी गई रचनाओं को सहेज कर पुस्तक प्रकाशित की जो हमेशा के लिए अजर अमर होंगी।

मेरा मन भी इस फुर्सत के समय मे अपने बचपन मे उड़ चला और मैंने बच्चों के लिए कुछ लिखने का प्रयास किया जो आप सभी की अदालत में हाजिर है।

कोटिशः आभार अन्तरा शब्दशक्ति एवं डॉक्टर प्रीति सुराना।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-179-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/